

प्रेमचंद के कथा साहित्य में भारत की दलित महिलाओं की सामाजिक स्थिति का चित्रण

¹Vinita Kumari & ²Dr. Tabasum Khan

¹Research Scholar of Sri Satya Sai University
²Department of Hindi Sri Satya Sai University

ARTICLE DETAILS

Article History

Published Online: 10 December 2018

Keywords

महिला, दलित, शोषण, उत्पीड़न, हिंसा, अधिकारिता

ABSTRACT

मुंशी प्रेमचंद (1880-1936) आधुनिक हिंदी और उर्दू साहित्य के सबसे प्रतिष्ठित और प्रगतिशील लेखक थे जिन्होंने लगभग 300 लघु कथाएँ, दर्जन से अधिक उपन्यास, कई निबंध, नाटक और कई विदेशी साहित्यिक कृतियों का हिंदी में अनुवाद किया। **Ad**दलित साहित्य **Even** शब्द 1958 में प्रचलन में आने से पहले ही, प्रेमचंद ने अपने कार्यों में दलितों के बहिष्कार, भेदभाव और शोषण की पीड़ा को मार्मिक रूप से प्रस्तुत किया। उनका अंतिम उपन्यास **last**गोदान '(1936) जिसका अर्थ है **a** द गिफ्ट ऑफ ए काउज़ एक किसान भारत का उपन्यास है जिसमें ब्रिटिश शासन के दौरान किसानों के परीक्षण और यात्रा वृत्तांत को दर्शाया गया है। उपन्यास के महिला पात्र - धनिया, झुनिया और सेलिया इस अवधि के दौरान भारतीय समाज में प्रचलित पितृसत्तात्मक और ब्राह्मणवादी मूल्यों की शिकार हैं। भारत की दलित महिलाएँ सदियों से मौन की संस्कृति में जी रही हैं। वे अपने शोषण, उत्पीड़न और उनके खिलाफ बर्बरता के लिए मूकदर्शक बने हुए हैं। उनका अपने शरीर, कमाई और जीवन पर कोई नियंत्रण नहीं है। उनके खिलाफ हिंसा, शोषण और उत्पीड़न की चरम अभिव्यक्ति भूख, कुपोषण, बीमारी, शारीरिक और मानसिक यातना, बलात्कार के रूप में दिखाई देती है; अशिक्षा, अस्वस्थता, बेरोजगारी, असुरक्षा और अमानवीय व्यवहार। सामंतवाद, जातिवाद और पितृ सत्ता की सामूहिक ताकतों ने उनके जीवन को बस एक नरक बना दिया है। उनमें से एक भारी बहुमत सबसे अनिश्चित परिस्थितियों में रहते हैं। आधुनिकता और आधुनिकतावाद के वर्तमान युग में वे अभी भी जीवन के अंधकारमय युग में जी रहे हैं।

प्रस्तावना

प्रेमचंद का हिंदी साहित्य का ऐतिहासिक उपन्यास , होरी नाम के एक गरीब किसान की कहानी है , जो गाय खरीदने की तीव्र इच्छा रखता है। वह चालीस साल का है और तीन बीघा जमीन का मालिक है , लेकिन वह लगातार गाँव के विभिन्न साहूकारों के कर्ज में डूबा रहता है। वह अपनी पत्नी धनिया , बेटे गोबर्धन और दो जवान बेटियों सोना और रूपा के साथ उत्तर प्रदेश के अवध के बेलारी नामक एक छोटे से गरीबी वाले गाँव में रहते हैं। वह हाथ से मुँह के अस्तित्व के लिए बहुत ज्यादा रहता है। बल्कि कुछ आवेगपूर्ण वादों के माध्यम से , होरी भोला नामक ग्रामीण से एक गाय प्राप्त करता है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे चीजें अच्छी होंगी। लेकिन सेना में एक के बाद एक मुश्किलें आती हैं। होरी लगातार अपने पूरे गुणा भाग के ऋणों को दूर करने के लिए जीवन भर-संघर्ष करता रहता है, लेकिन उसमें गहरे और गहरे डूब जाता है और अंततः ओवरवर्क के कारण उसकी मृत्यु हो :

धनिया - जाती है। उपन्यास के दलित महिला पात्र, झुनिया और सेलिया , लैंगिक भेदभाव , आर्थिक शोषण और असमान लिंग संबंधों के कारण सामाजिक - सांस्कृतिक अधीनता से पीड़ित हैं। गायत्री चक्रवर्ती ने अपने निबंध Sub कैन द सबाल्टर्न स्पीक ? 'में हाशिए , शोषितों और शोषितों के दृष्टिकोण के प्रतिनिधित्व , प्रतिरोध, सांस्कृतिक अधीनता के बारे में कई सवाल को सामने लाया है। वह कहती है कि सबाल्टर्न बोल नहीं" । दलित महिलाएं अपने पति"सकता, प्रेमी या उच्च जाति के पुरुषों द्वारा शारीरिक और मौखिक शोषण का शिकार होती हैं।

भारत में दलित महिलाएँ काम की जगहों पर और घर में गालीगलौज के साथ गरीबी को दूर करने के लिए-सबसे खराब किस्म के संयोजन का अस्तित्व रखती हैं और उनका इस्तेमाल और शोषण किया जाता है। नारीवादी समाजशास्त्री गेल ओमवेदट ने भारतीय दलित महिलाओं को "दलित के बीच दलित " कहा है। डॉ।

अम्बेडकर ने उनके दृष्टिकोण का समर्थन करने के लिए "हिंदू जाति व्यवस्था को एक प्रकार का पत्थर के बर्तन के रूप में एक दूसरे के ऊपर सेट किया। न केवल ब्राह्मण और खत्रिय शीर्ष पर हैं और उस जाति की महिलाएं कुचल और धुली हुई शक्ति की तरह सबसे नीचे हैं। इसलिए सबसे निचले पायदान पर दलित हैं और उनके नीचे दलित महिलाएँ हैं"। दलित महिलाओं के मुद्दे अन्य भारतीय महिलाओं से अलग हैं। उन्हें सभी प्रकार के मानवाधिकारों, शिक्षा, आय, मानसम्मान-, सामाजिक प्रतिष्ठा, धार्मिक अधिकारों आदि से वंचित रखा गया है। उन्हें आर्थिक अभाव से ज़रूरी दुनिया से बाहर का सामना करना पड़ता है, और आजीविका कमाने के लिए तत्काल आवश्यकता होती है।

इस प्रकार, उनकी अधीनता अधिक तीव्र है दलित - होने के नाते उन्हें उच्च जाति के पुरुषों और महिलाओं द्वारा समान रूप से अपमानित किया जाता है, और उनके स्वयं के पुरुष लोक। इसके बावजूद कि उन्होंने अपने द्रष्टा परिश्रम और श्रम द्वारा भारत के विकास में बहुत योगदान दिया है। लेकिन, उनके योगदान को कभी मान्यता नहीं मिली। उनकी आवाज और विरोध लगभग अदृश्य हैं। वास्तव में, जब हम विकास प्रक्रिया में महिलाओं के हाशिए पर जाने, या भारत में असंगठित क्षेत्र में गरीबी या महिला के योगदान के बारे में बात करते हैं, तो हम उनकी विशिष्टता के बारे में सचेत हुए बिना भी उनका उल्लेख कर रहे हैं (मेनन)1981)। यह ध्यान देने योग्य है कि भारत में मुख्यधारा की महिलाओं के आंदोलन ने भी दलित महिलाओं की दयनीय स्थिति को नजरअंदाज किया और उनकी उपेक्षा की। दलित महिलाओं के जीवन पर बहुत कम साहित्य अब तक उत्पन्न हुए हैं (व्यास)1993)। डॉ। बी आर अम्बेडकर ने महिलाओं की पहली पर अपने लेखन में विस्तार से बताया है कि कैसे मनु ने महिलाओं की स्वतंत्रता और समान अधिकारों पर अंकुश लगाकर महिलाओं की स्थिति से वंचित किया है। वह महिलाओं की भलाई के लिए हिंदू कानून में कुछ बदलाव लाने के लिए तैयार थीं। 1952 में जब वे जे. नेहरू के मंत्रिमंडल में एल. कानून मंत्री थे। उन्होंने हिंदू कानून में संशोधन लाने की कोशिश की, जैसे कि गोद लेना, संरक्षकता, तलाक, हिंदू विवाह, विधवा पुन विवाह और महिलाओं के लिए

संपत्ति के अधिकार। लेकिन पारंपरिक जाति के हिंदुओं के कड़े विरोध के कारण बिल को संसद में स्वीकार नहीं किया गया और अंततः डॉ। अंबेडकर को नेहरू के मंत्रालय से इस्तीफा देना पड़ा।

दलित महिला की विचारधारा

दलित महिला एक सामाजिक शक्ति है, एक सांस्कृतिक प्रतीक है, और एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है। वह एक कृषक संस्कृति की प्रमुख विशेषता है। वह सच्चा बिल्डर है और औद्योगिक संस्कृति में प्रमुख चेहरे का उत्तराधिकारी है। वह इमारतों के निर्माण और सड़कों के निर्माण में एक बड़ी भूमिका निभाता है। वह कपड़ा मिलों, सीमेंट कारखानों, अस्पतालों और खदानों में काम करता है। दलित महिलाओं को राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए अस्सी प्रतिशत श्रम का योगदान देने का अनुमान है। वह परिवार की देखभाल करती है। वह पानी, चारा, ईंधन इत्यादि लाने के लिए मीलों और मीलों पैदल चलता है। मुर्गा कौवे के सामने वह उठता है। उसके दिन की शुरुआत घर के सामने गाय के गोबर के पानी के छिड़काव से होती है। जैसे ही सूरज उगता है वह खेतों में काम करने के लिए निकल जाती है। वह शाम को वापस आती है और अपने घर का काम शुरू करती है। वह बहुत कम खाती है और वह रात में देर से सोती है और वह पेटीकोट पहनती है। इतने बड़े परिवार, समाज और राष्ट्र के परिश्रमी समर्थक और निर्माणकर्ता आज भारत को बहुत नुकसान पहुँचा रहे हैं। वह अस्तित्व और अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही है। वह दलित होने और स्त्री होने के अभाव से भरी जिंदगी जी रही हैं। वे हिंदी अक्षरों और शब्दों को पहचानने में भी सक्षम नहीं हैं, और अपने हस्ताक्षर को अपनी लिखावट में रखते हैं। वे मुश्किल से नौ या दस से आगे की गिनती कर सकते थे। विडंबना यह है कि वे वयस्क या गैर औपचारिक चैनलों के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने में अधिक रुचि नहीं रखते हैं। न तो वे अपने बच्चों को शिक्षित करने में रुचि रखते हैं, विशेष रूप से बेटियों के रूप में वे सोचते हैं कि यह उनके लिए कोई फायदा नहीं था और किसी भी तरह से उनके वास्तविक जीवन से संबंधित नहीं था, या उनके लिए कुछ सार्थक काम या रोजगार प्राप्त किया।

महिलाओं के बीच साक्षी

महिलाओं के संस्कार संबंधी अशुद्धता के बारे में जो विचार उनकी गतिविधियों पर शारीरिक बाधाओं के साथ पैदा हुए, उन्होंने जोर देकर कहा कि महिलाओं के मासिक धर्म, प्रजनन और यौन कार्यों ने उन्हें स्वाभाविक रूप से अशुद्ध बना दिया है। उन विचारों ने जाति के भीतर उसकी निम्न संस्कार स्थिति को उचित ठहराया और जाति के हित में उसकी अपनी कामुकता को नियंत्रित करने में असमर्थता। उसकी यौन असंवेदनशीलता सभी समस्याओं की जड़ में थी। और निचली जातियों ने अपनी यौन कामुकता को नियंत्रित करने में विफलता को आंशिक रूप से क्या अशुद्ध बना दिया। इस विचार ने जाति विभाजन को सुदृढ़ किया, आईडी के लिए निचली जातियों को ब्राह्मणों की तरह व्यवहार किया गया, भेद भंग हो गए। इसलिए लिंग विभाजन ने जाति विभाजन को सुदृढ़ किया, और लिंग विचारधारा ने न केवल पितृसत्ता की संरचना को बल्कि जाति के संगठनों को भी वैध बनाया। सभी जाति समूहों की महिलाओं ने इस गवाह का अनुभव किया है, हालांकि सबसे बुरी तरह से पीड़ित सबसे निचली जाति और बहिष्कृत समूहों की महिलाएं थीं, जिन्होंने उच्च जाति और अपनी जाति के पुरुषों के हाथों पितृसत्तात्मक दमन का खामियाजा उठाया। एक निम्न जाति जिसने अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार किया था, कई पीढ़ियों से पदानुक्रम को आगे बढ़ाने का प्रयास कर सकती थी लेकिन आर्थिक ताकत अकेले अपर्याप्त थी। जाति को अनुष्ठान शुद्धता की अन्य सांस्कृतिक विशेषताओं को भी अपनाना पड़ा, जिसका अर्थ था महिलाओं की स्वतंत्रता में बाधा। महिलाओं पर बढ़ता नियंत्रण, विशेष रूप से उनकी कामुकता और उनके आंदोलन के संबंध में और विरासत के अधिकारों पर जाति पदानुक्रम में वृद्धि के आवश्यक हिस्से हैं। एम श्रीनिवास प्रसिद्ध एन. समाजशास्त्री स्पष्ट रूप से कहते हैं कि izationसंस्कृतकरण के परिणामस्वरूप महिलाओं के साथ कठोरता का व्यवहार होता है। जाति समूहों की शुद्धता के लिए मुख्य खतरा महिला कामुकता से और महिलाओं में उ "शुद्ध" च जातियों में निम्न गुणवत्ता वाले रक्त को संक्रमित करने की क्षमता से आता है। इसलिए महिलाओं को सुरक्षा और नियंत्रण करना पड़ता था।

इसलिए पुरदाह और एकांत अस्तित्व में आया। आर्य लोग अपने साथ पितृसत्तात्मक संयुक्त परिवार की व्यवस्था को महिलाओं को नियंत्रित करने के प्रभावी साधन के रूप में लेकर आए। महिलाओं को पुरुषों की संपत्ति के रूप में माना जाता है, जैसा कि उनके क्षेत्र या संपत्ति का था। केवल बेटों को संपत्ति विरासत में मिली और इसलिए बेटों का जन्म महत्वपूर्ण हो गया। महिलाएं अपने मासिक धर्म से जुड़ी अशुद्धता के कारण कुछ अनुष्ठान नहीं कर सकती थीं और इसलिए बेटे का जन्म परिवार के नाम को आगे बढ़ाने के लिए और कुछ अनुष्ठान करने के लिए आवश्यक था, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि अपने पिता के अंतिम संस्कार की चिता को रोशन करना ताकि उसे सुनिश्चित किया जा सके। मृत्यु के बाद बेहतर जीवन।

धनिया

धनिया नायक होरी की एक ईमानदार पत्नी है, जो एक ईमानदार और ईश्वर है जो उत्तर प्रदेश के बेलारी गाँव में रहने वाले व्यक्ति से डरता है। वह छत्तीस साल की है, एक बेटे की माँ, गोबर, सोलह साल की और दो बेटियाँ, सोना, उम्र बारह और रूपा, आठ। घर और मैदान में काम की अधिकता के कारण, धनिया अपनी उम्र को और अधिक बढ़ा देती है।

वह एक व्यावहारिक महिला हैं। अपने विवाहित जीवन के बीस वर्षों के दौरान, वह पूरी तरह से समझती है कि भले ही वह दयनीय जीवन जीती हो, लेकिन जमींदार के ऋण को चुकाना असंभव है। इसलिए वह अपने पति होरी को चाटुकारिता और जमींदार के पैरों को छूना पसंद नहीं करती। इस मामले पर, उसका अपने पति के साथ हमेशा मतभेद रहता है। "उनका मन अक्सर इस तरह के मामलों के खिलाफ विद्रोह करता था। लेकिन उसके पति की कुछ डांट उसे हकीकत में वापस झटक देती"। (2)

जब होरी के भाई हेरा ने अपनी गाय को मौत के घाट उतार दिया, तो वह स्तब्ध रह गई क्योंकि उसने उसे एक माँ की तरह बचपन से पाला था। [हीरा]"(89 वह उसे सबक सिखाने का फैसला करती है। लेकिन होरी ने उसकी पिटाई शुरू कर दी क्योंकि वह नहीं चाहता कि मामला पुलिस तक पहुंचे। हर बार जब धनिया होरी को

गाली देती है, तो वह उस पर कुछ और प्रहार करता है। ग्रामीण झगड़ा करने के लिए आते हैं, लेकिन मस्ती को देखने के लिए दूर रहते हैं। गाँव के स्वयंभू पशु चिकित्सक पंडित दातादीन ने होरी को फटकार लगाते हुए कहा, "घर की लक्ष्मी को इस तरह से मारना क्या ! हेराकी छाया आप पर भी पड़ गई है ? होरी गुस्से में जवाब देता है, "जब तक मैंने उसे अपना अधिकार नहीं दिया, तब तक मैंने आराम नहीं किया। जितना अधिक मैं उसके दोषों को देखता हूँ, उतना ही अधिक वह ।" धानिया आंसू भरी आँखों से कहती है, "मैंने अपनी पूरी जिन्दगी उसकी खातिर बर्बाद कर दी है, और इसी तरह अब वह मुझे पुरस्कृत करता है। होरी अपने भाई (90) " को सज़ा से बचाना चाहता है लेकिन धानिया पुलिस को सूचित करता है कि हेरा ने गाय को मार डाला। होरी इंस्पेक्टर को रिश्वत देता है और हेरा के घर की तलाशी रोकता है। धनिया फिर से वस्तुओं; होरी की आँखें गुस्से से फूल जाती हैं और वह उसे पीटने के लिए उसका हाथ पकड़ लेता है। लेकिन गोबर उनके बीच कदम रखता है और गुस्से में अपने पिता को वापस खड़े होने के लिए कहता है।

झुनिया

झुनिया बेलारी के पड़ोसी गाँव सेमरी में रहने वाले एक चरवाहे भोला की विधवा बेटा है। होरी के पुत्र गोबर ने भोला के घर पर गाय की बिक्री पर बातचीत करने के दौरान झुनिया के साथ एक संबंध विकसित किया।

वह अपने जीवन के अंत तक उसके प्रति वफादार रहने का वादा करता है। झुनिया गोबर के साथ अपने अनुभवों को गाँव के विभिन्न –respectable of लोगों के साथ साझा करती है। हर दिन वह बाज़ार में दूध ले जाती है, जहाँ वह विभिन्न प्रकार के लोगों जैसे क्लर्क, अधिकारी, वकील, ठाकुरों, मनी लेंडर्स से मिलती है जो-उसे प्यार देते हैं। वे उसे जुनून के साथ घूरते हैं और उसके साथ गहरे प्रेम में होने का दिखावा करते हैं। उनमें से कुछ ने उसे पैसे और गहने भी दिए। झुनिया पंडितजी की घटना का वर्णन करती है जो अपने माथे को चंदन के लेप से अंकित करता है लेकिन अपनी पत्नी की अनुपस्थिति में उसकी ओर उन्नति करता है। वह कहता है, " झुनिया मेरी रानी, दिन पर दिन तुम अपनी

सुंदरता से मेरा दिल बहलाती हो। लेकिन आज मेरे पास तुम हो"। वह झुनिया के पैर और धड़ पर गिरता (४०) :हैं Poor गरीबों पर भी थोड़ा दया करो। जब भगवान पूछेंगे तो आप क्या जवाब देंगे; मैंने तुम्हें इतनी सुंदरता दी है और तुम ब्राह्मण की तरह नहीं दिखते। बोलो, मैं एक ब्राह्मण हूँ, जो तुम्हारे होठों से एक शब्द के लिए प्यासा है। मुझे हर दिन भिक्षा में पैसा मिलता है। यह आपके सौन्दर्य के बारे में है कि मैं आज के लिए तरसता हूँ। झुनिया ने उसके चेहरे पर दूध की पिचकारी फेंकी। वह दूध में डूबा हुआ, बुरी तरह से चोटिल और दर्द में कराहता हुआ बैठा है। यह घटना समाज में व्याप्त नैतिक मूल्यों के पाखंड, भ्रष्टाचार और गिरावट को प्रमाणित करती है। झुनिया के चरित्र से यह भी पता चलता है कि जाति से संचालित समाज में विधवाओं के साथ हुई हिंसा। एक युवा विधवा होने के नाते, वह अपने गाँव में पुरुष लोक से कामुक व्यवहार का विरोध करने के लिए मजबूर है। गोबर उसे रोक लेता है, लेकिन उसकी और उसके अजन्मे बच्चे की जिम्मेदारी लेने के बजाय, वह पाँच महीने की गर्भवती झुनिया को उसके पिता की झोपड़ी के पास छोड़ कर शहर की ओर भाग जाता है। एक गर्भवती और अविवाहित झुनिया को उसके रिश्तेदारों द्वारा विस्थापित किया जाता है और होरी के परिवार के साथ आश्रय लेने के लिए मजबूर किया जाता है। उसके चरित्र को रूढ़िवादी ग्रामीणों द्वारा पूरी तरह से खराब कर दिया गया है, जो रुपये का भारी जुर्माना लगाते हैं। एक होनहार महिला को सहायता प्रदान करने के लिए होरी पर 100। ठाकुर झेंगुरी सिंह, जो पैंतालीस का एक आदमी है, जो तीन बार शादी करता है, घोषणा करता है, "झुनिया जैसी लड़की को उसका सिर काट देना चाहिए"। वह आगे कहती है कि, "उसे शरण देकर होरी ने समाज के कुओं को जहर दिया है"। (108) पंचायत ने रु। होरी द्वारा भुगतान की जाने वाली किस्म में 100 नगद और तीस मण अनाज।

जबकि झुनिया को अपने बेटे लल्लू का प्रबंधन करना मुश्किल हो रहा है, उसे पता चलता है कि वह फिर से गर्भवती है और दूसरे बच्चे की उम्मीद कर रही है। उसकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है; वह बार-बार-सिरदर्द और भूख न लगना से पीड़ित है। ऐसी परीक्षण स्थिति के बावजूद, गोबर लगातार उस पर शारीरिक मांग

करता है। बारिश के मौसम में , लल्लू बीमार पड़ जाता है; दस्त से पीड़ित होने लगता है और एक सप्ताह के भीतर, मर जाता है। लल्लू की मौत के बाद , झुनिया अपराधबोध-, तनाव और अवसाद की लहर से घिर गई है। "उनकी स्मृति अब लल्लू की तुलना में उन्हें बहुत प्रिय थी। जिंदा था कि वह सांत्वना से अधिक झुंझलाहट का स्रोत था।)"262) गोबर अपनी दयनीय सामाजिक - आर्थिक स्थिति से अपनी शारीरिक थकान और मानसिक आघात में डूबने के लिए शराब की ओर जाता है। उन्होंने झुनिया को एक के रूप में "बीमार शगुन महिला") लेबल किया जो उनकी सभी मौद्रिक समस्याओं(264) के लिए जिम्मेदार थी। गोबर देर रात घर लौटता है , झुनिया को किसी पागल के बहाने गाली देता है, उसे घर से निकालने की धमकी देता है और मारपीट करता है। घरेलू हिंसा का उसका अनुभव उसे अपने आप में वापस ले लेता है और व्यवहार करता है , लेकिन, एक ऑटोमेटन से ज्यादा नहीं "(262)। वह लगभग उपेक्षा के कारण बच्चे के जन्म में अपना जीवन खो देती है , और गब्बर अपनी दूसरी गर्भावस्था के दौरान उससे जो दुर्व्यवहार करता है। हालांकि , गोबर पर एक उल्लेखनीय बदलाव तब आता है जब वह एक श्रमिक हड़ताल के दौरान बुरी तरह घायल हो जाता है। झुनिया का दिल पिघल गया। वह टूट जाती है और उसकी आंखों से आंसू छलकने लगते हैं। गोबर क्षमा मांगता है और अपने दोषों को स्वीकार करता है,, झुनिया, मैं मर रहा हूँ। मुझे माफ़ करदो। भगवान ने मुझे सजा दी है। मैंने तुम्हारे साथ बुरा व्यवहार किया । वह प्रलाप में तीन दिन गुजारता है। उसे पता चलता है कि वह मौत से बच गया है।

दलित साहित्य महिलाएँ प्रतिनिधित्व :

स्मृती की उम्र के (ईसा पूर्व 300-500 लगभग) दौरान, जब मनु, कानूनगो ने अपना कोड रखा , तो महिलाओं की स्थिति और बिगड़ गई। मनु का कोड स्पष्ट रूप से कहता है कि "एक महिला को कभी भी स्वतंत्र नहीं होना चाहिए। उसके पिता का बचपन में उस पर अधिकार है, युवावस्था में उसका पति और बुढ़ापे में उसका बेटा ।" शास्त्रीय युग की अवधि में , विवाह पर कई नए प्रतिबंध लगाए गए जैसे बाल विवाह आदर्श बन गए, विधवाओं को पुनर्विवाह से वंचित कर दिया गया ,

महिलाओं को संपत्ति के अधिकार से वंचित कर दिया गया और दहेज प्रथा अस्तित्व में आई। महिलाओं और शूद्रों को समान रूप से अवमानना माना जाता था। हम यह भी देखते हैं कि एक जाति के भीतर महिला की स्थिति उसकी जाति के आर्थिक वर्चस्व के साथ कैसे घट गई। इसके लिए सामग्री का आधार जाति के भीतर संपत्ति का रखरखाव था। दलित पैंथर अपनी अभिव्यक्ति में बेहद आक्रामक थे। उन्होंने साहित्य और राजनीति के माध्यम से जाति पदानुक्रम में नियुक्ति के बारे में असंतोष व्यक्त किया। लेकिन दलित साहित्य ने दलित महिलाओं को मातृत्व के गौरव के समान पितृसत्तात्मक ढांचे और महिलाओं के समग्र अधीनता में निर्मित किया। इसी तरह दलित राजनीति भी महिलाओं के सशक्तीकरण के मुद्दों को एक गैर मुद्दे के रूप में देखती है। दलित राजनीति में महिलाएं केवल संख्या में हैं और हमारी महिला ढांचे की यात्रा में भी फंस जाती हैं। इससे दलित महिलाओं का और अधिक हाशिए पर चला जाता है।

दलित महिलाओं को भारत के महाकाव्य महाभारत और रामायण दोनों में चित्रित किया गया था। दलित एक नया शब्द है और इसका इस्तेमाल आमतौर पर उत्पीड़ित और अवसादग्रस्त वर्गों के लिए किया जाता है। मातंगा कन्या , ताताका, सुरपनखा, आयोमुखी और मंदोदरी। वे शूद्र श्रेणी में आते हैं। भारत में , कई दलित लेखकों ने भारत में महिलाओं के आंदोलन और उच्च जाति की महिलाओं द्वारा इसके वर्चस्व पर गहरा असंतोष व्यक्त किया है , जो आदिवासी महिलाओं के उत्पीड़न की विशेष समस्या पर सावधानीपूर्वक नज़र रखते हैं। प्रेमचंद भारत के दलित साहित्य में अग्रणी थे। बंगाल में, दलित आदिवासियों के परीक्षण और क्लेश का प्रतिनिधित्व करने वाली एकमात्र प्रामाणिक आवाज़ महाश्वेता देवी की है। Up द्रौपदी , a चोली का पच्ची', and चुन्नी कोटाल 'और ma हुलामहर मां' जैसी कुछ मार्मिक कहानियों में, उन्होंने बड़ी अंतर्दृष्टि के साथ और आदिवासी महिलाओं द्वारा अनुभव किए गए अस्तित्व के दर्द को महसूस करते हुए चित्रित किया है। 'सुबाचनी', भागीरथ मिश्र की एक कहानी भी एक आदिवासी महिला की अनकही पीड़ाओं के वर्णन के माध्यम से तथाकथित सभ्य समाज के काले चेहरे को उजागर करती है। आने

वाली पीढ़ियों के कई युवा लेखक अब आदिवासी जीवन और समस्याओं के बारे में लिख रहे हैं।

दलित महिला आंदोलन

के दशक में 70 और 1960स्वतंत्रता के बाद , दलित आंदोलन और महिलाओं का आंदोलन क्रमशः जाति और लिंग के खिलाफ अपने अधिकारों की मांग करने के लिए उभरा। हालाँकि , इन आंदोलनों से दलित महिलाओं की विशिष्ट समस्याओं को स्वीकार नहीं किया गया। इसलिए में दलित महिलाओं की पहचान के 1990 कई विशेष, स्वतंत्र और स्वायत्त दावे थे; इस मामले में राज्य स्तर पर दलित महिला (NFDW) और अखिल भारतीय दलित महिला मंच (AIDWF) के लिए नेशनल फेडरेशन का गठन किया गया है। महाराष्ट्र दलित महिला संगठन (MDMS) का गठन में किया गया 1995 था। एक साल पहले, भारतीय रिपब्लिकन पार्टी (BRP) की महिला शाखा और बहुजन महिला संगठन (BMS) की स्थापना बहुजन महिला परिषद (BMP) द्वारा की गई थी। दिसंबर में 1996, चंद्रपुर में, एक विकास वंचित दलित महिला परिषद का आयोजन किया (वीवीडीएमपी) जिस दिन अंबेडकर ने मनु) दिसंबर 25 गया था और को (स्मृति को आग लगा दी थी भारतीय स्मृति दिवस के रूप में मनाने का प्रस्ताव था। में दलित ईसाई 1997 महिलाओं का एक संगठन क्रिस्टी महिला संगठन स्थापित किया गया था। ये संगठन कई मुद्दों पर एक साथ आए हैं जैसे कि भारतीय स्त्री मुक्ति दिवस और संसद निकायों में ओबीसी महिलाओं के लिए आरक्षण के मुद्दे पर। विभिन्न क्षेत्रों में दलित नारीवादी के साथ इंडियन एसोसिएशन ऑफ वीमेन स्टडीज (IAWS) नेटवर्क ने दलित महिलाओं की समस्याओं और पहचान पर विशेष मुद्दों को लाया था। (2003 :राजा)

निम्न जाति की महिलाओं की शिक्षा पर ध्यान केंद्रित करना दलित महिलाओं की उभरती पहचान के

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रेमचंद। गोदान। जय रतन और पी। लाल द्वारा अनुवादित। मुंबई जैको पब्लिशिंग हाउस ; .2012 प्रिंट।
2. स्पिवक, गायत्री चक्रवर्ती। —सैन्टाल्टर बोलो? Ism मार्क्सवाद और संस्कृति की व्याख्या। ईडी। कैरी

लिए जिम्मेदार महत्वपूर्ण कारकों में से एक है। सावित्रीबाई द्वारा सुधारवादी हस्तक्षेप और में 1848 अछूत कन्याओं के लिए स्कूल खोलने का महात्मा फुले दलित महिलाओं की बदलती स्थिति के लिए एक । डॉ। अम्बेडकर के(२००३ :राजा) महत्वपूर्ण मोड़ था। विचार और कार्य ने दलित महिलाओं के जीवन में महत्वपूर्ण अंतर ला दिया। उनके आंदोलन और विशेष रूप से उनके संगठनों ने कई दलित महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में सक्रिय होने और नेतृत्व हासिल करने के लिए प्रोत्साहित किया , समकालीन समय में आत्म सम्मान ने महिलाओं को क्षेत्रीय , राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर दलित महिलाओं के लिए संगठन में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

उपसंहार

प्रेमचंद के कथा साहित्य के अनुसार आधुनिक समाजों में नारीवादी स्थिति पर काम करने की जरूरत हैदलित महिलाओं द्वारा इस मुद्दे पर स्वयं के बाद से अन्यथा बहस बलात्कार में बदल जाती है। दलित महिलाओं की भूमिका और अवसरों को प्रभावित करने वाली बुनियादी समस्यापर्याप्त की कमी के कारण उनकी असहाय निर्भरता से इस क्षेत्र वसंत में रोजगाररोजगार के अवसर, सीमित कौशल , अशिक्षा, सीमित गतिशीलता और स्वायत्तता की कमीस्थिति ।जब तक समाज के पितृसत्तात्मक रवैये में संशोधन नहीं लाया जाता , तब तक महिलाओं की स्थिति को बदलना मुश्किल है। वह समय परिपक्व होता है जब कोई स्त्री को पुरुष के बराबर समझता है ; उसकी गरिमा प्रदान करें ; उसकी क्षमताओं की सराहना करें और उसके कारण सम्मान प्राप्त करें। तभी यह संभव है कि महिला को सही अर्थों में सशक्त कहा जा सकता है।

- नेल्सन और लॉरेस ग्रॉसबर्ग। लंदन :मैकमिलन, .1988प्रिंट
3. डिमरी, जयवंती। छवियाँ और ग्रामीण महिला का प्रतिनिधित्व। नई दिल्ली इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ : एडवांस स्टडी, शिमला, .2012प्रिंट।
 4. एलन टीएंडए , थॉमस, 1992, "दलित गरीबी और विकास", ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली।
 5. चतुर्वेदी, जी, 1985, भारत में दलित शिक्षा , आरबीएसए प्रकाशन, जयपुर।
 6. दास, आर.एम., 1993, मनु के दर्शन में शिक्षा , एसबी प्रकाशन, जालंधर।
 7. डेकार्ड, बी.एस., 1979, दलित आंदोलन , हार्पर और रो, न्यूयॉर्क।
 8. देसाई। एन , 1985, भारतीय दलित , लोकप्रिय प्रकाशन, बॉम्बे।
 9. मेनन, एम, इंदु, 1981, भारत में दलित महिलाओं की स्थिति, उप्पल प्रकाशन, नईदिल्ली।-
 10. पाल, बी.के., 1989, दलितों की समस्याएं और चिंताएँ, एबीसी प्रकाशन, नई दिल्ली।
 11. राम, आर, 2003, अनुसूचित जातियों की शिक्षा , मयूर प्रकाशन, चेन्नई।
 12. राव, एम.एस., 1997, शिक्षा, सामाजिक स्तरीकरण और गतिशीलता, NCERT, नईदिल्ली।
 13. रेगे, वाई.एम., 1938, व्हेयर दलित्स , लोकप्रिय पुस्तक, बॉम्बे। व्यास , ए, 1993, भारत में दलित अध्ययन, ऋषि प्रकाशन , नई दिल्ली।